1

मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका

Mentorship Progr
Nehru Vihar

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-12

(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

DTVF / OPT-23 **HL-2312**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

नाम (Name): RAMNARESH

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

1	1	0	8	6	3	9

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 147

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)
E-51/4

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

किंचित अशुद्धियों पर ध्यान दें।

परिचय दक्षता अच्छी है।

उत्तर तथ्यात्मक हैं।

भाषा में प्रवाह है।

निष्कर्ष अच्छे हैं।

प्रस्तुति दक्षता अच्छी है।

उत्तर अच्छे हैं।

अभ्यास करते रहें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।
तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि।।

प्रस्तुत दोहा रीतिकालीन कवि बिहारी की 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है, जिसमें श्रृंगार चेतना का उत्सव प्रस्तुत किया गया है। इन पंक्तियों में बिहारी का भक्ति भाव मौजूद है।

व्याख्या -

बिहारी कह रहे हैं कि उनकी पुकार ईश्वर के प्रति भक्ति फीकी पड़ रही है, इसीलिए भगवान उनपर अनुग्रह नहीं कर रहे हैं। बिहारी का मन सांसारिक दुखों से तन गया है, ऐसे में वे ईश्वर से कृपा की आस लगाए बैठे हैं।

शिल्प सौंदर्य -

1. भाषा - ब्रज भाषा
2. भाषा की समास शक्ति व समाहार समता उत्कृष्ट है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. बिहारी की व्याकरणिक व्यवस्था की वुत्पत्ति ने तारीफ की है।

4. रस - भक्ति रस

5. छंद - दोहा * अलंकार - अनुप्रास

भाव सौंदर्य -

1. बिहारी श्रृंगार चेतना के कवि हैं, परंतु यहाँ भक्ति भाव दिखाई दिया है।

2. पद्माकर की अंतिम दिनों में श्रृंगार चेतना से ऊबकर भक्ति का मार्ग पकड़ते हैं।

3. • बिहारी राधावल्लभ संप्रदाय से जुड़े हुए थे, जहाँ राधा को कृष्ण से अधिक महत्त्व प्राप्त था।

विलासितापूर्ण वातावरण से ऊबे हुए कवि-मन का चित्रण हुआ है।

अच्छा

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मोह-मद-मात्यो, रात्यो कुमति कुनारि सों,
बिसारि बेद लोक-लाज, आँकरो अचेतु है।
भावै सो करत, मुँह आवै सो कहत कछु,
काहू की सहत नाहिं, सरकस हेतु है।
'तुलसी' अधिक अधमाई हू अजामिल तें,
ताहू में सहाय कलि कपट-निकेतु है।
जैबे को अनेक टेक, एक टेक ह्वैबे की, जो
पेट-प्रिय-पूत-हित रासनाम लेतु है।।

कवितावली के 'उत्तरकांड' से ली गई इन पंक्तियों में तुलसी ने कलियुग की समस्याओं को उकेरा है। तथा 'राम' के प्रति भक्ति भाव भी दृष्टव्य है।

व्याख्या -

तुलसीजी कहते हैं मोह, मदिरा में ही कुमति तथा कुसंगतियाँ फैली हुई हैं तथा लोगों ने लोक लाज की परवाह किए बिना वेदों का त्याग कर दिया है। ऐसे में तुलसी • भगवान से प्रार्थना कर रहे हैं कि जिस तरह उन्होंने अजामिल का उद्धार किया था, उसी प्रकार इस कलयुग की समस्याओं को समाप्त कर हम पर कृपा करें।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तुलसी के लिए पार्थिनों को गाता है। पंक्तियों के एक भाव की महिमा को गुनगाते हैं।

शिल्प सौंदर्य

1. भाषा - ब्रज भाषा
2. तुलसी लोक भाषा के प्रति प्रतिबद्ध हैं -
"का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिए साँच"
3. छंद - सवैया
4. अलंकार - अनुप्रास

भाव सौंदर्य

1. तुलसी कलयुग की समस्याओं से मुक्त होकर उसके समाधान के तौर पर 'रामराज्य' प्रस्तावित करते हैं।
2. कवितावली में जिस स्तर पर तुलसी ने आर्थिक समस्याओं का चित्रण किया है, भक्ति काल में किसी और ने नहीं किया।
3. तुलसी सगुण राम के भक्त हैं तथा उनकी भक्ति दास्य भक्ति है।
4. लोकमंगल की भावना मौजूद है।

अच्छा

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

छायावादी कवि 'निराला' की 'राम की शक्ति पूजा' से उद्धृत इन पंक्तियों में 'राम' संशय में हैं, जिसका सुंदर अंकन निराला ने यहाँ किया है।

व्याख्या

जब राम ने देखा कि स्वयं दुर्गा रावण को अपने अंक में लिए हुए हैं, तथा राम आज के युद्ध में रावण से पराजित हो गए हैं, तब शिविर में सभी लोग बैठे हुए हैं। और इस निराशा के माहौल में अंधेरी रात तथा गहरा अंधेरा गगन छाया हुआ है। राम को भविष्य की दिशा सूझ नहीं रही है और समुद्र पीछे बहुत तीव्रता से गरज रहा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पंक्तियों में प्रयुक्त अप्रस्तुत का प्रयोग है।

शिल्प -

1. भाषा - तत्सम बहुला खड़ी बोली
2. समास शैली युक्त भाषा।
3. विराट प्रकृति का बिंब छायावादी चेतना के अनुरूप है।

भाव -

1. प्रकृति छायावादी चेतना के अनुरूप विराट रूप में विद्यमान है।
2. प्रतीकात्मक तौर पर मौजूद ये पंक्तियाँ अन्योक्ति के तौर पर राम की चिंता को दिखा रही है।
3. यहाँ चिंता रावण के साथ-साथ, ब्रिटिश सत्ता, अधर्म, रूढ़िवादी समाज — सभी स्तरों पर है।

बहुत अच्छा

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हाथ जिसके तू लगा,
पैर सर रखकर वो पीछे को भगा
औरत की जानिब मैदान यह छोड़कर,
तबेले को टट्टू जैसे तोड़कर,
शाहों, राजों, अमीरों का रहा प्यारा
तभी साधारणों से तू रहा न्यारा।

ये पंक्तियाँ 'निराला' की 'कुकुरमुत्ता' से ली गई हैं, जो कि प्रगतिवादी कवियों से मुक्ति की बात करती हैं। इन पंक्तियों में कुकुरमुत्ता की अद्वितीयता की बात की जा रही है।

व्याख्या - निराला कुकुरमुत्ता के हीन चरित्र की व्याख्या कर रहे हैं कि यह औरतों की तरह मैदान छोड़कर भाग जाता है। हालांकि यह शाही घरानों में प्रिय रहा है, इसलिए यह साधारण भी नहीं है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मुहावरों का उचित प्रयोग हुआ है।

यहाँ बिम्ब भी लोक जीवन से लिए गए हैं।

अच्छा

6/10

विशेष

1. रामविलास शर्मा ने भी कुकुरमुत्ता को 'लुम्पेन प्रोलेटेरियट' कहा है।

2. कुकुरमुत्ता को प्रतीकात्मक रूप में रखकर निराला ने प्रगतिवादी चिंतन की रूढ़ियों से बाहर जाना रखा है —
"प्रोग्रेसिव का रोके नहीं रुकता पारा"

3. निराला ने इस कविता को 'भाव-भाषा विचार की दृष्टि से सबसे सुंदर कविता' कहा है।

4. अंग्रेजी भाषा का प्रयोग छायावादी चेतना से बाहर रहने का प्रतीक है।

5. व्यंग्यात्मकता व तुकबंदी विद्यमान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) तुम सभ्य हो, 'मार्केट' जिनका सात सागर पार है,
पर ग्राम की वह हाट ही उनका 'बड़ा बाज़ार' है।
तुम हो विदेशों से मँगाते माल लाखों का यहाँ,
पर वे अकिंचन नमक-गुड़ ही मोल लेते हैं वहाँ॥

मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत-भारती' में भूत, वर्तमान, भविष्य का समग्र अंकन किया है। इन पंक्तियों में भी वे 'वर्तमान' के ब्रिटिश सत्ता के शोषक चरित्र की व्याख्या कर रहे हैं।

व्याख्या

गुप्त जी कह रहे हैं कि भारत को अंग्रेजों ने बड़े मार्केट के तौर पर स्थापित किया है। वहाँ वे भारत से कच्चा माल ले जाकर तैयार माल को भारत में बेचते थे, जिससे भारत में गरीबी, कृषि पर दबाव, बेरोजगारी बढ़ रही है। जबकि अंग्रेज धन का बहिर्गमन कर रहे हैं।

शिल्प

1. भाषा - अभिधात्मक तथा खड़ी बोली

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

६. हरिगीतिका छंद का प्रयोग।

भाव -

1. नवजागरण चेतना का अंकन।

2. भारत दुर्दशा में भारतेन्दु ने भी इस बात को उठाया है।

3. ब्रिटिश सत्ता के शोषक चरित्र को उकेरा है।

4. 'उद्बोधन काव्य' के रूप में प्रतिष्ठित।

5. वर्तमान में भी प्रासंगिक है।

कवि उठाते पूँजीवाद व विभागों की स्थिति को केन्द्र ... बनाना चाहता है। पंक्तियों में विदेशी शब्द 'मार्केट' व देशज शब्द हाट का प्रयोग हुआ है। अच्छा

6/10

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) सूर की काव्य-कला के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सूर भक्तिकाल की सगुण काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं। सूरसागर उनकी ख्याति का स्थायी आधार है, जिसमें संवेदना के तौर पर निर्गुण-सगुण द्वन्द्व को उकेरा है, तो वहीं शिल्पगत तौर पर उनकी सर्वोत्कृष्टता दिखाई पड़ती है।

(क) भाषा -

(i) ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है, जो शुक्लजी के शब्दों में ~~इतनी~~ इतनी उत्कृष्ट है कि बाकी के कवियों की ब्रज भाषा सूर की जूठन सी जान पड़ती है।

(ii) मोहि, तोहि जैसे बुंदेलखंडी प्रयोग तथा महँगी के अर्थ में 'प्यारी' का प्रयोग (पंजाबी) शामिल है।

(ख) काव्य रूप -

सूर का निश्चित काव्य रूप नहीं है, परंतु कृष्ण की लीला का बयान

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करने के कारण प्रायः इन्हें लीलापद कहा जाता है।

(ग) बिंब -

हालाँकि यह आधुनिक संकल्पना (क्लिष्ट) है किंतु फिर भी अंधे होने के बावजूद बिंबों का पर्याप्त वैविध्य मौजूद है -

दृश्य -

"मेरो मन अनंत कहाँ सुख पावै
जैसे उड़ि जहाज कौ पंछी, फिरि जहाज पै आवै।"

ध्वनि -

"बृथा कोकिल बजन कानन।"

(घ) वक्रता तथा वाग्विदग्धता शैली का का उत्कृष्ट रूप में प्रयोग। क्योंकि गोपियाँ उपालंभ करती नजर आ रही हैं -

"आयो घोष बड़ो व्यापारी
लादि खेप गुन ज्ञान जोग की
या ब्रज में आन उतारि।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) द्विवेदी जी के शब्दों में अलंकार शास्त्र तो मानो सूर के पीछे-पीछे हाथ जोड़कर चलता है।

यमक -

"निरखति अंग श्याम सुंदर के बार-बार लावति छाति
कागद मसि मिलकर हो गई स्याम स्याम की पाती।"

(च) हजारीप्रसाद द्विवेदी जी के अनुसार कवि की महानता का पता इस बात से चलता है कि कोई कवि कितने कम शब्दों से किस असीम की ओर इशारा कर रहा है। "बृथो कोकिल बनत कानन" के माध्यम से सूर ने स्पष्ट कर दिया कि प्रकृति का संदेश राग का नहीं विराग का है।

इस प्रकार, सूर की काव्य-कला बहुआयामी तथा संपूर्णता से युक्त है। हालाँकि इसकी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ने कहीं-कहीं व्याकरणिक दोष भी गिनाए हैं, ~~प्रसंग~~ अन्यथा वे शिरोमणि कवि हैं। इसीलिए कहा गया कि -

"उत्तम पद कवि गंग का
उपमा में बलबीर
केशव अर्थ गंभीर का
सूर तीन गुण धीर।"

कोमलता व संगीतात्मकता का उल्लेख कर दें

अच्छा

12/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'दिनकर के 'कुरुक्षेत्र' में अपने समय की अनुगूँज सुनाई देती है।' इस मत के संदर्भ में कुरुक्षेत्र के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिनकर ने 'शांति पर्व' से प्रेरित होकर अपने समय की समस्याओं को 'कुरुक्षेत्र' के माध्यम से उठाया है। जिसमें महाभारत युद्ध के पश्चात युधिष्ठिर-भीष्म संवाद के माध्यम से संपूर्ण कथानक प्रस्तुत किया गया है।

अपने समय की सबसे बड़ी समस्या के तौर पर दिनकर ने 'युद्ध की समस्या' को देखा है। द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका ही थी, जिसने दिनकर को कुरुक्षेत्र लिखने पर मजबूर किया। जहाँ मनुष्य के समक्ष 'लघुमानववाद' तथा 'पश्चात के संकट' जैसे विषय उभरकर आने लगे।

इसके अतिरिक्त इसमें दिनकर कहते हैं कि जब अन्याय पक्ष हावी हो तो युद्ध करना शायद धर्म बन जाता है तथा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

न्याय पक्ष को युद्ध हेतु स्वयं को निर्णायक नहीं ठहराना चाहिए। -

"पुरातन हो न्याय जो, वही युद्ध हेतु निर्णायक है। इस पंक्ति में भारत का ब्रिटिश सत्ता के प्रति लड़ने का ~~संघर्ष~~ संदेश भी यहाँ विद्यमान है।

साथ ही, अन्याय को सहना भी कायरता है, तथा दिनकर के अनुसार 'पुण्य है विच्छिन्न कर देना, उसे बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ हो।'

इहलोकवाद में विवाद का उल्लेख करें

साथ ही, विज्ञान का प्रयोग मानव कल्याण हेतु करने की बात का ज़िक्र भी किया है क्योंकि —

"रस मनुज के हाथ से छूटते विज्ञान के फूल
शुभ धर्म अपना भूल।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भीष्म के ~~का~~ स्वीकार भाव के माध्यम से 'काम चेतना' की सहज स्वीकृति का भाव तत्कालीन समय की देन है —

"न था उसे विराम धर्म से स्नेह मोक्ष ऊपर है।"

साथ ही तत्कालीन समय के समाजवाद का जो दौर चल रहा था वह भी यहाँ देखा जा सकता है —

"जब तक मनुज-मनुज का सुख भाग नहीं सम होगा
शमित न होगा कोलाहल संघर्ष नहीं कम होगा।"

स्पष्टतः कुरुक्षेत्र में दिनकर ने अपने समय की कुंठन सुनाने हेतु 'शांति पर्व' के मौलिक उद्भावनाएँ प्रस्तावित की है।

अच्छा

8/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'सूर के उद्धव एक प्रकार से कृष्ण (शासक) एवं गोपियों (प्रजा) के बीच बिचौलिये नेता के प्रतीक हैं। इस रूप में यह प्रतीक आज भी उतना ही प्रासंगिक है।' क्या आप इस मत से सहमत हैं? अपना अभिमत सोदाहरण स्पष्ट करें। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृष्ण के राजकार्य हेतु मथुरा जाने के कारण गोपियाँ मथुरा में कृष्ण के विरह में दुखी हैं। ऐसे में कृष्ण उद्धव को गोपियों के पास अपना संदेशा लेकर भेजते हैं। जहाँ उद्धव ज्ञान मार्गी निर्गुण को स्थापित करने का प्रयास करता है। जिसमें वह अंततः पराजित होता है और स्वयं 'सगुणी' हो जाता है।

परंतु, यहाँ उद्धव की 'बिचौलिया' की भूमिका के तौर पर भी वर्तमान संदर्भ में देखा जा सकता है। प्रारंभ में जिस तरह गोपियों ने कृष्ण को जिस तरह प्रेम किया, उसी तरह जनता भी अपने वोट के माध्यम से विधायक व सांसद के तौर पर नेता को शक्ति प्रदान करती है।

परंतु जब कृष्ण की तरह राज के नेता भी जनता का प्रतिनिधित्व करने के लिए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जब संसद या विधानसभा जाते हैं, तो वे भी कृष्ण की तरह ही जनता (गोपियों) को भूल जाते हैं। तथा वहाँ ~~जानकर~~ जाकर अपने हितों व स्वार्थों (कुब्जा) में संलग्न हो जाते हैं और उधर जनता (गोपियाँ) परेशान रहती हैं। तथा जनता को समय पर सेवाएं नहीं मिल पाती तथा उनके मुद्दे लटके रहते हैं।

परंतु जब ~~नेता~~ फिर से चुनाव का समय होता है, तो कृष्ण की तरह वे भी अपने बिचौलिए (उद्धव) भेजते हैं, ताकि जनता को वे ये संदेशा जाए कि हमारा नेता हमारे लिए कार्य कर रहा है। परंतु गोपियों की तरह जनता भी बिचौलियों (उद्धव) की मंशा को समझती है। ~~और नेता को~~

इस प्रकार, प्रस्तुत व्याख्या एक गौण

राजनीति के [illegible] सामन्ता प्रकट करते वाले उद्धव को (सही है?)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

तथा इस महत्वपूर्ण स्तर पर देखी जा सकती है। लेकिन मूल संवेदना निर्गुण-सगुण द्वन्द्व को लेकर ही है।

अच्छा

8½/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) पद्मावत अन्योक्तिपरक अर्थ धारण करने वाली रचना है या समासोक्तिपरक? विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कामायनी में निहित 'बिंब-सौंदर्य' का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'युद्ध और शांति की समस्या वास्तव में सामाजिक समता की समस्या है।'- कुरुक्षेत्र के आधार पर इस मत पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'असाध्य वीणा' 'सृजन तत्व' की गहन व्याख्या करने वाली कविता है'- इस कथन के परिप्रेक्ष्य में इस कविता पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'बादल को घिरते देखा है' कविता के शिल्प पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में कवि ब्रह्मराक्षस का सजल-उर-शिष्य क्यों होना चाहता है? विश्लेषण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) नील कमल की तरह कोमल और आर्द्र, वायु की तरह हल्का और स्वप्न की तरह चित्रमय! मैं चाहती थी उसे अपने में भर लूँ और आँखें मूँद लूँ। ...मेरा तो शरीर भी निचुड़ रहा है माँ! कितना पानी इन वस्त्रों ने पिया है! ओह!
शीत की चुभन के बाद उष्णता का यह स्पर्श!

प्रस्तुत ~~गद्य~~ गद्यावतरण नवलेखन दौर के नाटककार मोहन राकेश के 'आषाढ़ का एक दिन' से लिया गया है, जो अस्तित्ववाद के खोते हुए प्रामाणिकता के संकट की बात करता है। इन पंक्तियों में मल्लिका, कालिदास के साथ बारिश में भीगने के अनुभव को बता रही है।

व्याख्या -

मल्लिका अपनी माँ अंबिका से कह रही है कि कालिदास के उसके साथ उसका अनुभव अत्यंत कोमल रहा है। वह कालिदास से अनन्य प्रेम की भावनाओं से प्रेरित होकर अपनी बात रख रही है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष -

1. प्रेम की गहन भावनाएँ अवतरण में स्पष्ट है। ऐसा ही भाव देवसेना व 'घनानंद' के यहाँ मिलता है।

2. प्रकृति का सुकुमार चित्रण।

3. मल्लिका का यही गहन प्रेम उसकी 'प्रामाणिकता' को समाप्त कर देता है।

4. भाषा काव्यात्मक लग रही है।

5. नाटकीयता विद्यमान है।

6. अंतिम वाक्य में 'शीत - उष्णता' द्वारा कथ्य की प्रभावी अभिव्यक्ति हो पायी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) स्त्री जीवन की पूर्ति नहीं, जीवन की पूर्ति का एक उपकरण और साधन मात्र है। सामर्थ्यवान, सफल मनुष्य अनेक स्त्रियाँ प्राप्त कर सकता है, परन्तु सफलता के अवसर जीवन में अनेक नहीं आते। पुत्र, संसार में बल ही प्रधान है; धन-बल और जन-बल। तुम मद्रगण के राजा गणपति की कृपा की उपेक्षा कर वृद्ध देवशर्मा की कृपा पर निर्भर रहना चाहते हो? पुत्र, तुम नीतिवान हो, विचार करो, यवन गणपति की पौत्री से विवाह कर तुम अनायास, बिना किसी विरोध के महाकुलीन सामन्त बन जाओगे, परन्तु देव शर्मा की प्रपौत्री से विवाह की इच्छा करने पर, उदार देव शर्मा के आपत्ति न करने पर भी, सम्पूर्ण द्विज समाज को अपना शत्रु बना लोगे। द्विजवर्ग की सत्ता, इतर जन की हीनता और इतर जन से सेवा प्राप्त करने के अधिकार पर आश्रित है। इतर जन को अपने समान बना लेने पर उनका विशेष अधिकार क्या रह जायगा? इतर जन का सशक्त होना उन्हें स्वीकार नहीं, परन्तु समर्थ की सत्ता वे भी अस्वीकार नहीं कर सकते। हम किसी को शत्रु क्यों बनायें? पुत्र, हमें शत्रुओं की नहीं, मित्रों और सहायकों की आवश्यकता है।

यशपाल के 'दिव्या' से लिया गया यह गद्यावतरण प्रेस्थ द्वारा अपने पुत्र पृथुसेन को कहे गए शब्द हैं। जो कि उपन्यास की केन्द्रीय संवेदना 'नारी चेतना' से प्रेरित है।

व्याख्या -

जब पृथुसेन दिव्या के प्रति अपने प्रेम की बात करता है तो प्रेस्थ समझाता है कि पुत्र नारी जीवन में साध्य नहीं होती बल्कि साधन है। तुम पहले सामर्थ्य हासिल करो, स्त्री स्वयं ही जीवन में आ जाती है। तुम सीरो से शादी कर लोगे तो बल प्राप्त करोगे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का हमारा मुख्य लक्ष्य बाधित हो जाएगा।

विशेष

1. नारी के प्रति वस्तुवादी दृष्टिकोण।
2. 'शक्ति' को साध्य तथा 'नारी' को साधन के तौर पर देखा गया है।
3. यशपाल ने अपना उपन्यास नारी को ही समर्पित किया है -
   '' उनको ...
   जिसने निरंतर पराजय सहकर भी स्नेह से अपने जीवन दीप को प्रज्वलित किया है।''
4. तत्सम बहुला खड़ी बोली।
5. वर्तमान उपभोक्तावादी दौर में नारी का पण्यकरण बड़े पैमाने पर विद्यमान है।

अच्छा

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हमने एक दूसरा उपाय सोचा है, एडुकेशन की एक सेना बनाई जाय। कमेटी की फौज। अखबारों के शस्त्र और स्पीचों के गोले मारे जायँ। आप लोग क्या कहते हैं?

भारतेन्दु हरिश्चंद्र के 'भारत दुर्दशा' नाटक से ये पंक्तियाँ ली गई हैं, जो कि नवजागरण चेतना से युक्त हैं। इन पंक्तियों में अंग्रेजों से लड़ने हेतु विभिन्न उपायों पर बात की जा रही है।

व्याख्या

जब पहला देशी, दूसरा देशी, एडिटर - सभी लोग विचार-विमर्श हेतु इकट्ठा हुए हैं, तो एक सुझाव आता है कि शिक्षा (एजुकेशन) को मुख्य हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया जाए तथा अखबारों से अंग्रेजों के शोषक चरित्र का उद्घाटन कर जनता तक पहुँचाया जाए, जिससे जनता जागरूक होकर अंग्रेजों के प्रति क्रांति व संघर्ष हेतु प्रेरित होगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष

1. नवजागरण चेतना के वाहक के तौर पर एजुकेशन पर बल दिया गया है

2. तत्कालीन भारतेन्दु मंडल के बालकृष्ण भट्ट (हिंदी प्रदीप), प्रतापनारायण मिश्र (ब्राह्मण) ने भी स्त्री मुक्ति पर बल दिया।

3. एजुकेशन, कमेटी ~~जैसे~~ का मानवीकरण किया गया है, इसीलिए इसे बच्चन सिंह ने इसे 'अन्यापदेशिक' भी कहा है

4. गुप्त जी ने भी 'भारत-भारती' में बेहतर भविष्य के उपाय के तौर पर शिक्षा की बात की है।

प्रश्नपत्र की प्रकृतिगतता पर ध्यान दें

अच्छा

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) कविता केवल वस्तुओं के रूप-रंग में सौंदर्य की छटा नहीं दिखाती, प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति के भी अत्यंत मार्मिक दृश्य सामने रखती है। वह जिस प्रकार विकसित कमल, रमणी के मुखमंडल आदि के सौंदर्य मन में लाती है, उसी प्रकार उदारता, वीरता, त्याग, दया, प्रेमोत्कर्ष इत्यादि कर्मों और मनोवृत्तियों का सौंदर्य भी मन में जमाती है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के 'कविता क्या है' निबंध से उद्धृत इन पंक्तियों में कविता के प्रभाव को उकेरा गया है।

व्याख्या

शुक्लजी के अनुसार कविता का कार्य केवल सौंदर्य का चित्रण करना नहीं है, बल्कि वह कर्म व मन के स्तर पर भी व्यक्ति को प्रभावित करती है तथा मनुष्य को लोकमंगल हेतु प्रेरित भी करती है।

सुकुमार-चित्र, चेहरे की सुंदरता के साथ-साथ वह वीरता, त्याग, दया, प्रेम जैसे भावों को भी मनुष्य के मन में जमाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष

1. कविता की लोकमंगल भाव से व्याख्या की गई है।
2. शुक्लजी ने कहा भी है- "कविता तो मन के वेग बदलकर मनुष्य को कर्म की ओर आकृष्ट करती है।"
3. 'विचारों की रूढ़- गुम्फित परंपरा' शुक्लजी के निबंधों की विशेषता है।
4. गुप्तजी लिखते हैं- "केवल मनोरंजन न कवि का उद्देश्य होना चाहिए उसमें उचित उपदेश का मर्म होना चाहिए।"
5. शब्दों की मितव्ययता तथा वैज्ञानिक शैली की विद्यमानता।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) अब वह यह मानने को तैयार है कि आदमी का दिल होता है, शरीर को चीर-फाड़कर जिसे हम नहीं पा सकते हैं। वह 'हार्ट' नहीं वह अगम अगोचर जैसी चीज है, जिसमें दर्द होता है, लेकिन जिसकी दवा 'ऐड्रिलिन' नहीं। उस दर्द को मिटा दो, आदमी जानवर हो जाएगा। ... दिल वह मंदिर है जिसमें आदमी के अंदर का देवता बास करता है।

फणीश्वरनाथ रेणु के आँचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' से यह गद्यावतरण लिया गया है। प्रस्तुत पंक्तियाँ डॉ. प्रशांत को लेकर लिखी गई हैं, जो कि लोगों की सेवा हेतु गाँव में आया हुआ है।

व्याख्या

डॉ. प्रशांत के जीवन में प्रेम जैसे तत्व कहीं छूट से गए हैं। जिससे वह नीरस जीवन जी रहा है। उसके लिए दिल मात्र 'हार्ट' बनकर रह गया है। जबकि हृदय ही है, जो मनुष्य को जानवर से अलग करता है। परन्तु डॉ. प्रशांत के लिए हृदय केवल चीरफाड़ का विषय बनकर रह गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष

1. रूपक का दोनों पक्ष - मानवीय तथा चिकित्सकीय का विश्लेषण किया गया है।

2. दिल में दर्द की दवा चिकित्सकीय न होकर भावनात्मक रूप में होती है और वर्तमान दौर में तो दिल के दर्द के कारण बढ़ते जा रहे हैं।

3. 'हार्ट' व 'हॉस्पिटल' जैसे अंग्रेजी शब्दों में रूपक की सुन्दर अभिव्यक्ति हो पाई है।

4. सूक्त शैली का प्रयोग है।
"दिल एक मंदिर है - - -)"

5. मनुष्य व जानवर के मध्य भिन्नता का आधार दिखाया गया है।

अच्छा

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) क्या आप कतिपय आलोचकों के इस मत से सहमति रखते हैं कि गोदान मनुष्यों की नहीं मनुष्य की कथा है? अपना मत प्रकट करते हुए होरी की चारित्रिक विशेषताओं को रेखांकित कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'दिव्या' उपन्यास के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) क्या 'दिव्या' उपन्यास में यशपाल मार्क्सवादी विचारधारा को प्रक्षेपित करने में सफल हुए हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य' निबंध के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास के रचनाकर्म के प्रति डॉ. रामविलास शर्मा के मत की उपस्थापना कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

डॉ. रामविलास शर्मा प्रगतिवादी साहित्यकार हैं। तथा 'तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य' निबंध में उन्होंने तुलसी साहित्य पर लगे आक्षेपों का जवाब देने का प्रयास किया है।

सबसे पहले वे कहते हैं कि जड़वादी तथा प्रतिक्रियावादी, दोनों ने ही तुलसी साहित्य का सही विश्लेषण नहीं किया है। एक ओर तो उन्हें ब्राह्मण व्यवस्था का पोषक माना गया है, तो दूसरी ओर नारी के प्रति उनके दृष्टिकोण को लेकर सवाल खड़े किए गए हैं।

तत्पश्चात वे भक्ति आंदोलन के उद्भव को भी वर्ग संघर्ष की पृष्ठभूमि के तौर पर देखते हैं, तथा अपनी प्रगतिवादी मान्यताओं के अनुसार भक्ति आंदोलन के उदय को स्वीकार करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

रामविलास शर्मा लिखते हैं कि तुलसी को ब्राह्मण व उच्च वर्ग के पोषक के तौर पर दिखाया गया है। जबकि तुलसी स्वयं निम्न वर्ग के दुखों से पीड़ित रहे हैं और वे स्वयं लिखते हैं-

"धूत कहो, अवधूत कहो ×××
काहू की बेटी सो बेटा न ब्याहब।"

ऐसे में तुलसी पर लगे ये आक्षेप गलत है। शर्मा जी के अनुसार ऐसे प्रसंग जहाँ निम्न वर्ग को महत्व नहीं दिया गया, वे निश्चित रूप से पुरोहित वर्ग द्वारा जोड़े गए हैं।

तत्पश्चात "ढोल गँवार शूद्र पशु नारी" के आधार पर नारी दृष्टिकोण को लेकर उठने वाले प्रश्नों का जवाब देते हुए कहते हैं कि तुलसी ने शबरी को 'भामिनी' कहकर पुकारा है तथा नारी को भी भक्ति के योग्य माना है एवं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

सीता के माध्यम से शास्त्री नारी चरित्र की बात की है। शर्मा जी के अनुसार नारी के संदर्भ में उक्त प्रसंग समुद्र प्रसंग में खलनायक पक्ष से कहा गया है।

एक पत्नी व्रत का उल्लेख करें

साथ ही, वह याद दिलाते हैं कि उस समय कोल-किरातों को निषादों के बीच दिया जाता है या ऐसे समय में निम्न वर्ग को 'भरत सम भ्राता' कहकर राम ने पुकारा है।

तत्पश्चात तुलसी के लोकमंगल पक्ष की तारीफ की गई है जहाँ वे बेरोजगारी, गरीबी जैसी आर्थिक समस्याओं का चित्रण कर 'रामराज्य' के तौर पर समाधान पक्ष भी प्रस्तुत करते हैं।

और अंत में वे कहते हैं कि भारत देश के रूप में चरित्र राम के समान हैं, जो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रारंभ में अत्यंत धैर्य दिखाता है किंतु जब अन्याय अत्यधिक बढ़ जाता है तो उसके विरुद्ध संघर्ष करने हेतु भी तैयार रहता है।

इस प्रकार रामविलास शर्मा ने अपने मत की स्थापना की है।

अच्छा

11½/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में 'मल्लिका' के रूप में मोहन राकेश एक अविस्मरणीय चरित्र की सर्जना में कहाँ तक सफल सिद्ध हुए हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक संवेदना के केन्द्रीय बिन्दु के तौर पर 'प्रामाणिकता के संकट' तथा 'अस्तित्ववाद' को लेकर चला है, जिसकी प्रमुख पात्र मल्लिका ही है।

मल्लिका कालिदास से गहन प्रेम करने वाली स्त्री है, जबकि कालिदास का प्रेम उथला रूप लिए है। जब कालिदास को उज्जैन से राजकवि हेतु प्रस्ताव आता है तो मल्लिका कालिदास को भेजने हेतु अपनी भावनाओं का त्याग कर देती है –

"मैं जानती हूँ कि मैं तुम्हें रोकूंगी तो तुम फिर जाओगे।"

तत्पश्चात् कालिदास राजकवि बनने हेतु चला जाता है, परंतु फिर भी मल्लिका की प्रेम भावनाएँ कम नहीं होती है और कालिदास के प्रति पूर्ण समर्पित

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रहती है -

"तुम वहाँ कविता करते रहे और
मुझे लगा कि मैं सार्थक हूँ।"

यहाँ तक कि अपने प्रेम के लिए वह अपनी माँ की भर्त्सना से भी द्वन्द्व में रहती है-

"और तुम्हारी दृष्टि केवल दोष ही देखती है।"

तत्पश्चात् कालिदास जब प्रियंगुमंजरी से विवाह कर लेता है, तो भी मल्लिका अपने प्रेम भावनाओं को कम नहीं करती क्योंकि उसने अपने 'स्व' का 'पर' में विलयन कर दिया है। जो कि एकवर्ग में प्रामाणिक जीवन के अभाव का संकेत है। और यहाँ तक कि वह आजीविका हेतु 'वारांगना' भी बन जाती है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

परंतु कालिदास के प्रति प्रेम कम नहीं होता।

इस तरह मल्लिका त्याग, भावना, प्रेम जैसे मूल्यों से परिपूरित है, जो कि जैनेन्द्र के 'मृणाल' के समीप दिखाई पड़ती है, जहाँ उसका उदात्तीकरण हो गया है।

भले ही आधुनिक नारीवाद को मल्लिका का यह चरित्र खटकता है, परंतु जहाँ नारी का वस्तुकरण जैसे तत्व शामिल हैं परंतु मल्लिका का यह चरित्र पाठक के मन में गहराई से धँस जाता है।

अच्छा

8½/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'धनिया प्रेमचंद की सर्जनात्मक आँख है।' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में धनिया का चरित्र-चित्रण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

गोदान में प्रेमचंद ने किसान समस्या का चित्रण किया है; परंतु इसमें होरी के साथ-साथ धनिया का चरित्र पाठक को गहराई से प्रभावित किए बिना नहीं रहता।

धनिया एक सरल किंतु विद्रोही चेतना से भरपूर नारी है जो अपने अधिकारों को लेकर जागरूक है, वह होरी से कहती है कि साहूकार ऋण ही तो लेगा. फिर क्यों "उसके पाँव सहलाएँ"। साथ ही अंत में पंचायत में भी उसका विद्रोही स्वभाव दिखता है।

वह अपने परिवार व पति के प्रति अत्यंत प्रतिबद्ध है। मात्र 36 वर्ष की उम्र में ही वह बूढ़ी नज़र आती है क्योंकि पहले बच्चों की मृत्यु तथा बाद में किसानी के तौर पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

संघर्षपूर्ण जीवन उसके जीवन को अत्यंत कठिन बना देता है।

धनिया अत्यंत प्रगतिशील भी है। क्योंकि जब गोबर झुनिया से विवाह कर लेता है, तो अछूत दलित होने के बावजूद तथा झुनिया के गर्भवती होने के बाद भी वह उसे अपने घर में शरण देती है। जो कि तत्कालीन समय (1936) की दृष्टि से अत्यंत प्रगतिशील रवैया है।

दरअसल गोदान होरी की बजाय धनिया हेतु नामकी है क्योंकि "अथाह संसार में होरी ही वह तृण था, जिसके सहारे वह जी रही थी।" लेकिन होरी व धनिया जब ऋण नहीं चुका पाते तथा होरी की अंत में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

मौत हो जाती है तो धनिया का जीवन और कठिन बन जाता है। जो कि प्रेमचंद के 'परम यथार्थवाद' की बानगी बनी है।

इस प्रकार धनिया के चरित्र के माध्यम से प्रेमचंद ने गोदान को उत्कर्ष दिला दिया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) प्रेमचंद के निबंध 'साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता)' के आधार पर उनकी साहित्य-संबंधी मान्यताओं को प्रस्तुत कीजिये। 20

'साहित्य का उद्देश्य' निबंध प्रेमचंद के भाषण का लिखित रूप है। जिसमें निम्नलिखित मान्यताएं प्रस्तुत की हैं -

(1) साहित्य अनिवार्य रूप से प्रगतिशील होता है। तथा प्रगतिशील साहित्य से तात्पर्य है - जो हमारे जीवन को बेहतर बनाने में योगदान दे।

(2) साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन नहीं होता है। ऐसे साहित्य को वे दो कौड़ी का साहित्य कहकर उतारते हैं।

साहित्य का उद्देश्य है - मनुष्य के कर्म करने की प्रेरणा स्थापित करना और उसे जगाना।

(3) तत्पश्चात प्रेमचंद सौंदर्य की मान्य

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

करते हुए आम-आदमी के जीवन के सौंदर्य की खोज करते हैं जहां पपड़ी वाले चेहरे, मुरझाए गालों के सौंदर्य की खोज करने की बात कहते हुए कृत्रिम सौंदर्य से स्पष्ट इनकार की बात कहते हैं।

4. साहित्य का उद्देश्य धन कमाना नहीं है।

5. साहित्य व समाज के संबंधों की बात करते हुए कहते हैं कि साहित्य तो समाज के आगे मशाल लेकर समाज को राह दिखाता है।

6. साहित्यकार को साहित्य की रचना करने से पूर्व अपने रुचि के विषय को चयनित करना चाहिए, तत्पश्चात उस विषय पर निरंतर चिंतन-मनन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

करते हुए विशेषज्ञता हासिल करनी चाहिए।

7. भाषा के तौर पर वे 'हिन्दुस्तानी' भाषा पर बल देते हैं क्योंकि यह आम-आदमी की भाषा है। तथा आम-आदमी ही साहित्य के केन्द्र में होना चाहिए।

8. और अंत में प्रेमचंद लिखते हैं कि हमें ऐसे साहित्य की आवश्यकता है, जो हममें बेचैनी, उत्साह पैदा करे क्योंकि "अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।"

इस प्रकार 'साहित्य का उद्देश्य' निबंध में प्रेमचंद का यथार्थवाद नजर आता है, तथा प्रेमचंद ने अपनी कहानियों व उपन्यासों में इन मान्यताओं

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

भली-भाँति परिपुष्ट किया है।

अच्छा

11½/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए। 15

श्रद्धा-भक्ति एक मनोविकारपरक निबंध है, जिसमें शुक्लजी वैज्ञानिक शैली में श्रद्धा व भक्ति जैसे भावों की व्याख्या तथा लोकमंगलकारी दृष्टिकोण स्थापित करते हैं।

सबसे पहले वे श्रद्धा को परिभाषित करते हुए लिखते हैं कि "सामान्य जनसाधारण से विशेष गुण युक्त वाले व्यक्ति को देखकर जो हाव भाव जो स्थायी आनंद पहले विकसित होते हैं, वह श्रद्धा कहलाती है।"

फिर शुक्लजी प्रेम व श्रद्धा में अंतर करते हैं। (क) प्रेम एकांतिक भाव है, श्रद्धा सामाजिक भाव है।

(ख) प्रेम व्यक्ति से कर्म की ओर जाता है जबकि श्रद्धा कर्म से व्यक्ति की ओर।

(ग) प्रेम के लिए स्पष्ट कारण आवश्यक नहीं जबकि श्रद्धा हेतु स्पष्ट कारण होता है।

जैसे विशेष भावों की उपस्थिति।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

तत्पश्चात् भक्ति की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि –

"प्रेम व श्रद्धा का योग भक्ति है।"

फिर वे श्रद्धा व भक्ति में अंतर स्पष्ट करते हैं –

(क.) श्रद्धा में श्रद्धेय व श्रद्धालु के मध्य अंतर बना रहता है, जबकि भक्ति में भक्त यह अंतर मिटा देना चाहता है।

(ख.) श्रद्धेय से प्रतिदान की चाहत नहीं रहती, जबकि भक्ति में कम से कम ईश्वर के साहचर्य की तो कामना रहती है।

(ग.) अगर भक्त की भक्ति उत्कृष्ट है, तो वह भी भक्ति का पात्र बन सकता है।

तत्पश्चात् शुक्ल जी श्रद्धा-भक्ति का लोकमंगल रूप में स्पष्ट करते हैं। वे श्रद्धा के लाभ बताते हैं कि –

Copyright – Drishti The Vision Foundation

श्रद्धा रखने से व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का अहसास होता है, जिससे वह समाज के प्रति और बेहतर कार्य करता है।

वे साथ ही कुछ खतरे भी बताते हैं कि –

→ "कुछ लोग जबरन श्रद्धा प्राप्ति हेतु प्रयास करते हैं, जिन्हें वे नरोड़ी, चंडूबाज कहकर पुकारते हैं।"

→ साथ ही योरप के न मानों की अनुपस्थिति के परिणामों को लेकर चेतावनी भी देते हैं।

इस प्रकार, लोकमंगल व रसवादी ही शुक्ल जी के इस निबंध का केंद्रीय बिंदु है।

उत्तम
9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) ''महाभोज' उपन्यास के 'दा साहब' का चरित्र-चित्रण कीजिये। 15

'दा साहब' उपन्यास के केन्द्रीय पात्र हैं, जिन्हें पढ़कर प्रारंभ में तो पाठक की उनके प्रति 'सहानुभूति' विकसित होती है किंतु धीरे-धीरे उनके वास्तविक चरित्र का पता चलता है —

(क) अपने हितों की शर्तों हेतु अवसरवादी दृष्टिकोण

जब बिसू की मौत होती है, तो दा साहब नकली सहानुभूति प्रकट करने वाले हैं और बिसू के पिता हीरा को अपनी गाड़ी में बिठाते हैं, जिससे स्वयं के प्रति लोगों की सहानुभूति लेते हैं —

"बेटे तो जाने कितनों के मरते हैं पर ऐसा मान...।"

(ख) चरित्र का दोगलापन

दा साहब के मन में जो बात रहती है, उसे बाहर चेहरे पर अंकित

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नहीं होने देते, तथा अपने हितों की पूर्ति हेतु दोगला चरित्र दिखाते हैं।

"अपनी बात को मन के अंदर की उथल-पुथल से काटकर भी कहा जा सकता है — यह गुर कोई दा साहब से सीखे।"

(ग) भ्रष्ट आचरण

दा साहब जोरावर सिंह जैसे अपराधी का सहारा लेकर राजनीति का अपराधीकरण करते हैं, तथा निम्न वर्गों के वोटों पर कब्जा पाते हैं।

(घ) दत्ता बाबू जैसे पत्रकारों को खरीदकर पत्रकारिता को अपने पक्ष में कर लेते हैं जिससे संपूर्ण सिस्टम को अपने कब्जे में कर लेते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(5) सत्ता का दुरुपयोग करते हैं तथा केवल सम्पत्ति के पीछे भागते हैं। दल-बदल जैसी गतिविधियों में संलग्न हैं।

इस तरह मन्नू भंडारी ने 'महाभोज' के माध्यम से तत्कालीन राजनीतिक विसंगतियों का यथार्थ चित्रण किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation